जगद्गुरु श्रीगौरकिशोर दास बाबाजी महाराज

(शिक्षा समन्वित जीवनी)

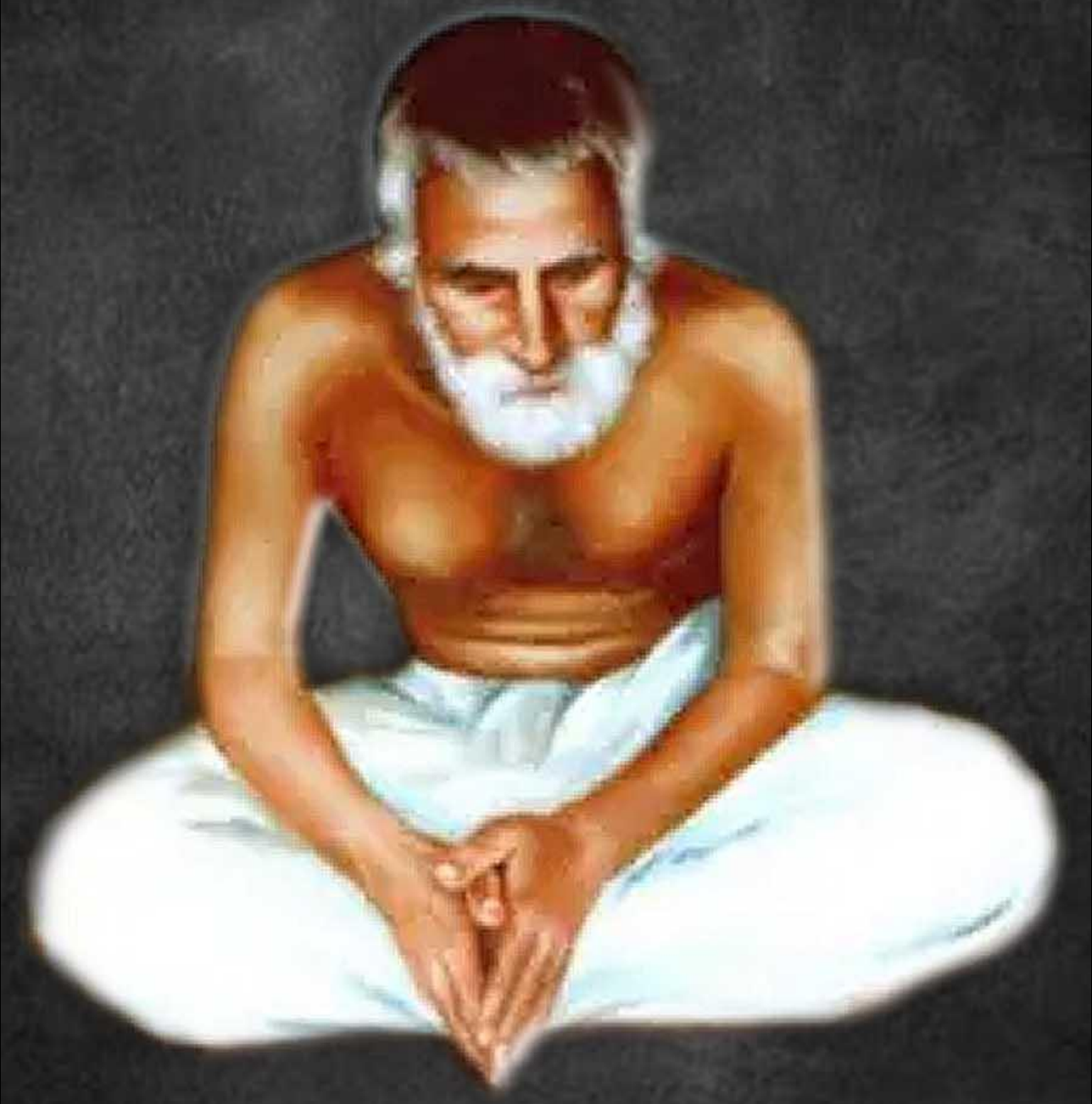

श्रील प्रभुपाद भक्ति सिद्धान्त सरस्वती ठाकुर जी की दिव्य लेखनी से संकलित

SGD

“कामुका: पश्यन्ति कामिनीमयं जगत् "

श्रीलगुरुदेव

एक समय प*** श्रील गौरकिशोर दास बाबाजी महाराज के प्रिय कोई एक महापुरुष के सम्बन्ध में बाबाजी महाराज के पास जाकर कहने लगा, – “आप जिन्हें एकान्त भक्तिमान् कहते हैं और 'प्रभु' - कहकर सम्बोधन करते हैं, वे विषय में अत्यन्त आसक्ति प्रकाश कर रहे हैं। उनकी घोर विषयी हो जाने की सम्भावना है!" इस बात पर श्रील बाबाजी महाराज ने इस प्रकार

गम्भीर भाव से मौन अवलम्बन कर लिया कि उनका वह मौन भाव देखकर पास में बैठे सभी लोग अत्यन्त भयभीत हो गये एवं सभी ने प*** को तुरन्त उस स्थान से भगा दिया। उस दिन श्रील बाबाजी महाराज में श्रीमद् ठाकुर भक्तिविनोद द्वारा कथित —

"वैष्णव चरित्र, सर्वदा पवित्र, येइ निन्दे हिंसा करि' ।
भक्ति विनोद, न सम्भाषे तारे, थाके सदा मौन धरि ।। "

अर्थात् वैष्णवों का चरित्र हमेशा पवित्र होता है। श्रीभक्ति विनोद ठाकुर जी उस व्यक्ति से बात नहीं करेंगे जो द्वेष के कारण वैष्णवों की निन्दा करता है, बल्कि हमेशा मौन रहते हैं। यह उक्ति स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर हो रही थी।

प*** के चले जाने के बाद बाबाजी महाराज भक्ति - विद्वेषियों को क्रोध से काँपते हुए कहने लगे – “इस पाषण्डी का स्वयं ही विषयों में लोभ हुआ है, तभी अपने अनर्थों को वैष्णवों के कंधों पर चढ़ाकर उनके प्रति कटाक्ष कर रहा है। वैष्णव कभी

भी कृष्ण विषयक सेवा में आसक्ति के अतिरिक्त जड़ विषयों में लोभ नहीं करते। जिसकी विषयों के प्रति किंचित्मात्र भी आसक्ति होती है, उसके हृदय में कभी भी प्रेमभक्ति उदित नहीं हो सकती। हरि सम्बन्धी विषयों में प्रगाढ़ आसक्ति के अतिरिक्त वास्तविक प्रेम-भक्ति के लक्षणों को विशुद्धभाव से समझा नहीं जा सकता। श्रीराधा ठाकुरानी के प्रति और श्रीकृष्ण में जिनकी प्रगाढ़ प्रेम भक्ति उदित हो गई है, उनकी हरि सेवा और वैष्णव सेवा के अनुकूल विषयों के प्रति स्वाभाविक प्रगाढ़ आसक्ति प्रकाशित होती है। उनका विषयों में हरि भक्तों की सेवा

की अनुकूलता के अतिरिक्त कभी भी अपने या अपने रिश्तेदारों के भोग के लिए आग्रह नहीं होता। उनकी श्रीकृष्ण की सेवा के अनुकूल विषयों में विषयी व्यक्ति की अपेक्षा भी अधिकतर आसक्ति देखकर भोगी और त्यागी लोग समझते हैं कि प्रेमिक भक्तों की भी जड़ विषयों के प्रति आसक्ति है। वस्तुत: जिनकी कृष्ण सम्बन्धी विषयों में प्रगाढ़ आसक्ति उदित नहीं हुई है, उनका श्रीकृष्ण में आसक्ति का अभिनय केवल कपटता है। जो व्यक्ति ऐकान्तिक वैष्णवों की निन्दा करता है, प्रियजन होने पर भी उसके साथ सम्बन्ध नहीं रखना ही उचित है;

अतएव मैं फिर इन पाखंडियों का मुँह नहीं देखूँगा।"

श्रीलगुरुदेव